

अनुपमा यात्रा

वर्ष: 03/ संस्करण: 02 पृष्ठ: 08/ मूल्य: 5 रुपये

भिवानी, मंगलवार 10 फरवरी 2026

anupama.express@ammb.ac.in

जीएसटी एवं वित्तीय समावेशन विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन

वित्तीय साक्षरता आज के समय की मूलभूत आवश्यकता: डॉ. मित्तल

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी के वाणिज्य विभाग द्वारा जीएसटी एवं वित्तीय समावेशन विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. जे. के. मित्तल, चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं वरिष्ठ अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट से रहे। उन्होंने अपने व्याख्यान में वस्तु एवं सेवा कर की अवधारणा, उसके व्यावहारिक पहलुओं तथा देश की अर्थव्यवस्था में उसकी भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने वित्तीय समावेशन के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि किस प्रकार बैंकिंग सेवाओं, डिजिटल भुगतान और सरकारी योजनाओं के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति तक आर्थिक सशक्तिकरण पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि वित्तीय साक्षरता आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, जिससे युवा वर्ग आत्मनिर्भर बन सकता है और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा सकता है।



महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने जीएसटी एवं वित्तीय समावेशन विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

जान प्रदान करते हैं, जो उनके करियर निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं। इस अवसर पर वाणिज्य विभाग की छात्राओं ने डॉ. मित्तल से



जीएसटी से संबंधित प्रश्नों पूछें, जिनका उन्होंने बड़ी ही सरल भाषा में उत्तर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रबंधकारिणी समिति के सहसचिव

पवन केडिया ने की। कार्यक्रम संयोजिका वाणिज्य विभागाध्यक्ष नीरू चावला व सहसंयोजिका अनीता वर्मा रही।

सांस्कृतिक गतिविधियों में आदर्श महिला महाविद्यालय ने जीती ओवरऑल ट्रॉफी



भिवानी। स्थानीय केएम बीएड कॉलेज में सेट किरोड़ीमल जयंती के अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें आदर्श महिला महाविद्यालय की छात्राओं ने भाग लेते हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन किया। छात्राओं ने ओवरऑल ट्रॉफी पर कब्जा जमाते हुए स्लोकाचरण में प्रथम, कोलॉज, बेस्ट ऑफ वेस्ट, रंगोली व मेहंदी में द्वितीय, ऑन-द-स्पॉट पेंटिंग, हिंदी व अंग्रेजी कविता पाठ में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

गौरतलब है प्रतियोगिता में विभिन्न महाविद्यालयों की अनेक टीमों ने भागीदारी स्थापित की। इस शानदार प्रदर्शन पर महाविद्यालय प्रांगण में पुरस्कार प्राप्त

करने वाली छात्राओं को सम्मानित किया गया। इस मौके पर महाविद्यालय प्राचार्या ने छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि छात्राएँ न केवल शैक्षणिक गतिविधियों में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करती हैं, अपितु सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से भी अपनी प्रतिभा का लौहा मनवाती हैं। उन्होंने कहा कि यह सफलता विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और संस्थान के अनुशासित वातावरण का परिणाम है। उन्होंने कहा कि वो उम्मीद करती हैं कि छात्राएँ भविष्य में भी इसी प्रकार महाविद्यालय का नाम रोशन करती रहेंगी। उन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारी करवाने वाली प्राध्यापिकाओं को भी बधाई दी।

आदर्श महिला महाविद्यालय में 'सखी संगम : एलुमनी मीट' 25 अप्रैल को

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय एलुमनी एसोसिएशन द्वारा 25 अप्रैल 2026 को महाविद्यालय परिसर में 'सखी संगम - एलुमनी मीट 2026' का आयोजन किया जा रहा है। ये जानकारी देते हुए एसोसिएशन की महासचिव डॉ. मोहिनी ने बताया कि ये एलुमनी मीट न केवल पूर्व छात्राओं के पुनर्मिलन का अवसर होगा, बल्कि यह कार्यक्रम पीढियों को जोड़ने और भविष्य को प्रेरित करने का एक सशक्त मंच भी बनेगा। उन्होंने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य महाविद्यालय से शिक्षा ग्रहण कर चुकी छात्राओं को एक सूत्र में पिरोना, उनके अनुभवों को साझा करना तथा वर्तमान छात्राओं को मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करना है। महाविद्यालय की प्रबंधकारिणी समिति एवं प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के कुशल मागदर्शन एवं प्रयासों से ये आयोजन महाविद्यालय स्तर पर अपने आप में एक विराट और ऐतिहासिक आयोजन साबित होगा। जिसमें विभिन्न बैचों की पूर्व छात्राएँ, शिक्षिकाएँ, प्राचार्या, एलुमनी एसोसिएशन के पदाधिकारी तथा महाविद्यालय परिवार के सदस्य एकत्रित होंगे। उन्होंने बताया कि एलुमनी मीट के लिए पंजीकरण की सुविधा क्यूआर कोड के माध्यम से उपलब्ध कराई गई है, ताकि अधिक से अधिक पूर्व छात्राएँ सरलता के साथ कार्यक्रम से जुड़ सकें। यह डिजिटल पहल आधुनिक समय के अनुरूप है और महाविद्यालय की प्रगतिशील सोच को

यादों, रिश्तों और प्रेरणा का उत्सव बनेगा एलुमनी मीट-2026



दशांती है।

डॉ. मोहिनी ने बताया कि कार्यक्रम की थीम 'पीढियों को जोड़ना, भविष्य को प्रेरित करना' रखी गई है, जो बात को रेखांकित करती है कि किस प्रकार पूर्व छात्राएँ अपनी उपलब्धियों, संघर्षों और सीख के माध्यम से वर्तमान छात्राओं को मार्गदर्शन दे सकती हैं। एलुमनी मीट के दौरान विभिन्न सत्रों का आयोजन किया जाएगा, जिनमें प्रेरक संवाद, अनुभव साझा करने के मंच, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और संवादात्मक गतिविधियाँ

शामिल होंगी। इससे महाविद्यालय और उसकी छात्राओं के बीच भावनात्मक और बौद्धिक संबंध और अधिक सुदृढ़ होंगे। इस एलुमनी मीट का उद्देश्य महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर चुकी छात्राओं को फिर से अपनी जड़ों से जोड़ना है। वे छात्राएँ, जो आज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बना चुकी हैं—कहीं शिक्षक, कहीं अधिकारी, कहीं उद्यमी तो कहीं समाजसेवी बनकर—एक बार फिर उसी परिसर में लौटेंगी, जहाँ से उनके सपनों ने उड़ान भरी थी।

उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के दौरान जब वर्षों बाद सहैलियाँ एक-दूसरे से मिलेंगी, तो यादों का सैलाब उमड़ पड़ेगा—कभी परीक्षा की चिंता, कभी वार्षिक उत्सव की तैयारियाँ, कभी शिक्षक की सीख और कभी दोस्ती की शरारतें। एलुमनी मीट के माध्यम से यह सब पल फिर से जीवंत हो उठेंगे। कई आँखें नम होंगी, तो कई चेहरों पर सुकून भरी मुस्कान होगी। उन्होंने कहा कि यह दिन केवल बीते कल को याद करने का नहीं, बल्कि भविष्य को नई उम्मीदों और प्रेरणा के साथ सवारने का भी होगा। 'सखी संगम - एलुमनी मीट 2026' महाविद्यालय और पूर्व छात्राओं के बीच सेतु का कार्य करेगा। यह कार्यक्रम इस बात का प्रमाण है कि आदर्श महिला महाविद्यालय केवल शिक्षा प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह आजीवन संबंधों और सामाजिक उत्तरदायित्वों को भी महत्व देता है।

महाविद्यालय में सात दिवसीय एफडीपी-एमडीपी का आयोजन

भिवानी। रिसर्च एंड डवलपमेंट सैल द्वारा महाविद्यालय में सात दिवसीय एफडीपी-एमडीपी का सफल आयोजन किया गया। जिसमें कंप्यूटर, कॉमर्स एवं साइंस विभाग की प्राध्यापिकाओं ने पंजीकरण करवाकर सक्रिय सहभागिता निभाई।

कार्यक्रम का आयोजन एमएसएमई टैक्नोलॉजी, रोहतक, हरियाणा सरकार के तत्वावधान में हुआ। जिसमें एआई एवं मशीन लर्निंग पर प्राध्यापिकाओं को प्रशिक्षित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य तौर पर आर.के. सिंह एमएसएमई रोहतक, राहुल, डैवलपर एमएसएमई रोहतक, प्रो. प्रमोद सिंह, चेरपरसन लॉ डिपार्टमेंट



सीबीएल्यू, डॉ. तमन्ना गुप्ता ने प्राध्यापिकाओं को विषयानुरूप प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने बताया कि

किस प्रकार एआई तकनीक शैक्षणिक प्रक्रिया को सरल बना सकती है, शोध कार्यों में समय की बचत कर सकती है

तथा विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता को व्यक्तिगत स्तर पर विकसित करने में सहायक हो सकती है।

साथ ही, शिक्षकों को यह भी समझाया गया कि एआई को एक चुनौती के रूप में नहीं, बल्कि एक सहयोगी उपकरण के रूप में अपना समय की मांग है। इस मौके पर प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने कहा कि आज का युग तकनीक का युग है और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इस युग की सबसे प्रभावशाली उपलब्धियों में से एक है। इसी के मद्देनजर महाविद्यालय में इनक्यूबेशन सेंटर स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। जिसके

तहत छात्राओं को रोजगार भी उपलब्ध करवाया जा सकेगा। जिसमें एमएसएमई पूर्ण सहयोगी रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि इसी सोच के तहत एफडीपी-एमडीपी जैसे कार्यक्रमों का आयोजन नियमित रूप से किया जा रहा है, ताकि शिक्षक नवीनतम शैक्षणिक तकनीकों, शोध प्रवृत्तियों और डिजिटल टूल से परिचित हो सकें।

कार्यक्रम का आयोजन प्रो. निशा शर्मा के संयोजन में किया गया। एफडीपी-एमडीपी के दौरान प्रतिभागी शिक्षकों ने एआई से जुड़े अपने प्रश्नों, शंकाओं और अनुभवों को साझा किया।

महिला सशक्तिकरण शक्ति नहीं, पहचान की पुनःप्राप्ति

महिला सशक्तिकरण को अक्सर कुछ तयशुदा शब्दों और प्रतीकों में बाँध दिया गया है। कामकाजी महिला, आत्मनिर्भरता, समान अधिकार, आरक्षण, या नारी शक्ति। लेकिन अगर गहराई से देखें, तो महिला सशक्तिकरण कोई एक योजना, कानून या अभियान नहीं है। यह एक सतत सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें स्त्री अपनी पहचान, निर्णय और संभावनाओं पर स्वयं का अधिकार पुनः प्राप्त करती है। यह शक्ति थोपे जाने से नहीं, बल्कि अवसर, विश्वास और सम्मान से जन्म लेती है। आज की महिला न तो केवल 'अबला' है और न ही किसी आदर्श लॉके में बंद 'सुपरवुमन'। वह एक इंसान है, जिसकी आकांक्षाएँ हैं, सीमाएँ हैं और अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जीने की चाह है। सशक्तिकरण का असली अर्थ यही है कि महिला को यह चुनने का अधिकार हो कि वह क्या बनना चाहती है।

इतिहास से वर्तमान तक की यात्रा

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति सदैव एक जैसी नहीं रही। वैदिक काल में महिलाएँ शिक्षा, दर्शन और सामाजिक जीवन में सक्रिय थीं। लेकिन समय के साथ सामाजिक रूढ़ियों, पितृसत्तात्मक सोच और परंपराओं ने महिलाओं की भूमिका को सीमित कर दिया। शिक्षा से वंचित करना, निर्णयों से दूर रखना और आर्थिक निर्भरता ने स्त्री को धीरे-धीरे हाशिए पर धकेल दिया।

बीसवीं सदी में सामाजिक सुधार आंदोलनों, स्वतंत्रता संग्राम और शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं को नई दिशा दी। आज महिलाएँ हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं—कृषि, विज्ञान, खेल, व्यापार, सेना और तकनीक। फिर भी, यह प्रगति असमान है। शहरी और ग्रामीण महिलाओं के अनुभवों में आज भी बड़ा अंतर है, और यही सशक्तिकरण की सबसे बड़ी चुनौती है।

आर्थिक स्वतंत्रता: सशक्तिकरण की रीढ़

महिला सशक्तिकरण की बात तब तक अधूरी है, जब तक महिला आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर न हो। आय का स्रोत केवल पैसे कमाने तक सीमित नहीं है, यह आत्मसम्मान, निर्णय क्षमता और सामाजिक सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। जब महिला अपनी कमाई स्वयं करती है, तो वह अपने और अपने परिवार के लिए बेहतर फैसले ले पाती है।

स्व-सहायता समूह, स्टार्टअप, माइक्रो-फाइनेंस और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने महिलाओं के लिए नए अवसर खोले हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ छोटे उद्योग, कृषि आधारित व्यवसाय और हस्तशिल्प के माध्यम से आत्मनिर्भर बन रही हैं। लेकिन इसके साथ ही, समान वेतन, सुरक्षित कार्यस्थल और काम के साथ परिवारिक संतुलन जैसी समस्याएँ अब भी मौजूद हैं।



शिक्षा: सोच बदलने का सबसे मजबूत हथियार

शिक्षा केवल डिग्री पाने का माध्यम नहीं, बल्कि सोच को विस्तृत करने की प्रक्रिया है। एक शिक्षित महिला न केवल अपने जीवन को बेहतर बनाती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की दिशा भी तय करती है। शोध बताते हैं कि शिक्षित माँ के बच्चे अधिक स्वस्थ, शिक्षित और आत्मविश्वासी होते हैं। आज भी कई जगह लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती। बाल विवाह, घरेलू जिम्मेदारियाँ और सामाजिक दबाव उनकी पढ़ाई के रास्ते में बाधा बनते हैं। महिला सशक्तिकरण तभी संभव है, जब शिक्षा को लड़कों और लड़कियों दोनों के

लिए समान रूप से अनिवार्य और सुलभ बनाया जाए।

निर्णय लेने का अधिकार: घर से संसद तक

महिला सशक्तिकरण का असली पैमाना यह है कि महिला कितने निर्णय स्वयं ले सकती है—चाहे वह अपनी पढ़ाई का हो, विवाह का, करियर का या मातृत्व का। घर के भीतर लिए गए छोटे फैसले भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने नीति निर्माण के बड़े निर्णय। राजनीति और प्रशासन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, लेकिन संख्या अब भी संतोषजनक नहीं है। जब महिलाएँ निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होती हैं, तो नीतियाँ अधिक समावेशी और संवेदनशील बनती हैं—चाहे वह स्वास्थ्य हो, शिक्षा हो या सामाजिक सुरक्षा।

मानसिक सशक्तिकरण: अनदेखा लेकिन आवश्यक पहलू

अक्सर सशक्तिकरण की चर्चा बाहरी संसाधनों तक सीमित रह जाती है, जबकि मानसिक सशक्तिकरण उतना ही जरूरी है। आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और अपनी आवाज उठाने का साहसकृत्य सभी भीतर से विकसित होते हैं। सामाजिक अपेक्षाएँ और तुलना महिलाओं पर मानसिक दबाव डालती हैं, जिससे वे अपनी क्षमताओं पर संदेह करने लगती हैं।

महिला सशक्तिकरण का मतलब यह भी है कि महिला को अपनी असफलताओं को स्वीकार करने, मदद माँगने और मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने का अधिकार हो।

पुरुषों की भूमिकाएँ साथ चलना, आगे नहीं निकलना

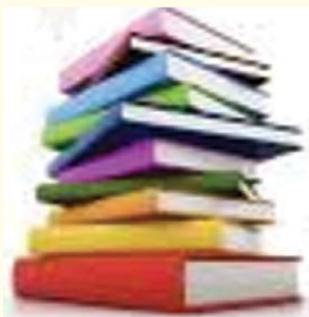
महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं की जिम्मेदारी नहीं है। पुरुषों की सोच और व्यवहार में बदलाव इसके लिए अनिवार्य है। बराबरी का अर्थ प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि साझेदारी है। जब पुरुष घर और समाज में जिम्मेदारियाँ साझा करते हैं, तो सशक्तिकरण एक स्वाभाविक प्रक्रिया बन जाता है।

सशक्तिकरण एक निरंतर यात्रा

महिला सशक्तिकरण कोई अंतिम लक्ष्य नहीं, बल्कि एक निरंतर चलने वाली यात्रा है। यह यात्रा तब पूरी होगी, जब महिला को अपनी पहचान साबित करने की जरूरत नहीं पड़ेगी, बल्कि उसकी क्षमता स्वतः स्वीकार की जाएगी। सशक्त महिला न केवल अपना भविष्य गढ़ती है, बल्कि समाज को अधिक संवेदनशील, संतुलित और प्रगतिशील बनाती है। अंततः, महिला सशक्तिकरण का अर्थ है— एक ऐसा समाज, जहाँ महिला को 'सशक्त' कहलाने की आवश्यकता ही न हो, क्योंकि समानता वहाँ स्वाभाविक हो।

जिंदगी में किताबों का महत्व

संस्कृति या सभ्यता के विकास के लिए ज्ञान चाहिए। ज्ञान किताबों से भी मिलता है। तभी तो पुस्तकों को बदलाव का सारथी माना जाता है। विश्व पुस्तक मेले में आपको ऐसी ढेर सारी किताबें मिल सकती हैं। पुस्तकें तो बदलाव का इंजन हैं, जिंदगी में किताबों का महत्व



अमेरिकी इतिहासकार बारबरा डब्ल्यू तुचमन ने कहा है कि पुस्तकें सभ्यता की वाहक होती हैं। इनके बिना इतिहास मौन है, साहित्य गुंगा, विज्ञान अपंग, विचार और अटकलें स्थिर हैं। पुस्तकें परिवर्तन का इंजन होती हैं। यह दुनिया की खिड़की और समय के समुद्र में खड़ा प्रकाश स्तंभ है। देश की राजधानी दिल्ली में कल यानी 10 जनवरी से विश्व पुस्तक मेले का आयोजन शुरू हो चुका है। यह मेला 18 जनवरी तक चलेगा। इस पुस्तक मेले में वैसे तो हर वर्ग के लोगों को जाना चाहिए लेकिन खासतौर पर युवा वर्ग को इसमें जरूरी रुचि लेनी चाहिए, हो सकता है इस पुस्तक मेले में आपको कई ऐसी पुस्तकें मिल जाएँ, जो आपके करियर के लिए मार्गदर्शक बन जाएँ। इस मेले में विभिन्न प्रकाशकों द्वारा बुक स्टॉल लगाए जाएंगे। जिनमें विद्यार्थियों को परीक्षा तैयारी करने से संबंधित पुस्तकें भी होंगी। आज इंटरनेट का जमाना है। सारी सामग्री वहाँ उपलब्ध है, बावजूद इसके पुस्तकों का बहुत महत्व है। खासतौर पर धर्म, संस्कृति और अन्य प्राचीन इतिहास से संबंधित जितनी जानकारी हमें पुस्तकों से मिल सकती है,

उतनी शायद इंटरनेट पर न प्राप्त हो पाए। इतिहास की पुस्तकों में उन देशभक्तों को भी जगह दी जानी चाहिए, जिन्होंने निस्वार्थ भाव से अपना सब कुछ देश के लिए न्योछावर कर दिया था। देश को आजाद कराने वाले ऐसे गुमनाम चेहरे भी हैं, जिनका कहीं कोई जिक्र नहीं मिलता। इतिहास की पुरानी किताबों से उनके बारे में जानकारी मिल सकती है। शिक्षा का असली मकसद विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास भी होता है। सभी शिक्षा संस्थाओं के शिक्षकों को युवा पीढ़ी को धार्मिक, देशभक्ति और अन्य प्रेरक पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए और स्कूली पाठ्यक्रम में जो भी इससे संबंधित विषय हैं उन्हें भी गंभीरतापूर्वक पढ़ाएँ, ताकि विद्यार्थियों में नैतिकता और मानवता की भावना ज्यादा से ज्यादा बढ़े। विश्व पुस्तक मेला पाठक संस्कृति को मजबूत करता है।

मेडिटेशन को बनाएँ सफल नेतृत्व की आंतरिक शक्ति

नेतृत्व को अक्सर बाहरी गुणों से आँका जाता है लेकिन लेकिन इतिहास गवाह है कि सबसे प्रभावशाली और दीर्घकालिक नेतृत्व बाहरी कौशल से नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन से जन्म लेता है। यही आंतरिक संतुलन मेडिटेशन के माध्यम से विकसित होता है। मेडिटेशन केवल साधना या आध्यात्मिक अभ्यास नहीं, बल्कि सफल नेतृत्व की एक मजबूत मानसिक और भावनात्मक नींव है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तनावपूर्ण युग में नेता निरंतर दबाव, अपेक्षाओं और निर्णयों के बोझ से थिरे रहते हैं। ऐसे में यदि मन अस्थिर हो, तो नेतृत्व कमजोर पड़ने लगता है। मेडिटेशन नेता को भीतर से सशक्त बनाता है और उसे परिस्थितियों पर नहीं, बल्कि स्वयं पर नियंत्रण सिखाता है। एक अच्छे नेता वही होता है जो पहले स्वयं को समझता है। मेडिटेशन आत्म-जागरूकता को बढ़ाता है। ध्यान के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को बिना किसी पूर्वाग्रह के देख पाता है। इससे यह समझ विकसित होती है कि कौन-सी भावना निर्णय को प्रभावित कर रही है और किस क्षण विवेक से काम लेना आवश्यक है। जब नेता स्वयं की कमजोरियों और शक्तियों को पहचान लेता है, तो वह न केवल बेहतर निर्णय लेता है, बल्कि टीम के प्रति भी अधिक संवेदनशील और न्यायपूर्ण बनता है। नेतृत्व का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है सही समय पर सही निर्णय लेना। लेकिन तनाव,

क्रोध या भय की स्थिति में लिया गया निर्णय अक्सर गलत दिशा में चला जाता है। मेडिटेशन मन को शांत करता है, जिससे विचारों में स्पष्टता आती है। ध्यान का अभ्यास करने वाला नेता जल्दबाजी में प्रतिक्रिया देने के बजाय परिस्थितियों का विश्लेषण करता है और संतुलित निर्णय लेता है। यही गुण संकट के समय एक साधारण व्यक्ति और एक सफल नेता के बीच अंतर पैदा करता है। नेतृत्व केवल आदेश देने का नाम नहीं है, बल्कि लोगों को समझने और उनके साथ जुड़ने की कला है। मेडिटेशन भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ाता है। इससे नेता दूसरों की भावनाओं को बेहतर ढंग से समझ पाता है और सहानुभूति के साथ नेतृत्व करता है। जब टीम महसूस करती है कि उसका नेता उन्हें सुनता है और समझता है, तो विश्वास और समर्पण स्वतः विकसित होता है। ऐसा नेतृत्व लंबे समय तक प्रभावी रहता है। आधुनिक कार्यसंस्कृति में तनाव नेतृत्व का स्थायी साथी बन चुका है। लगातार लक्ष्य, समय-सीमा और प्रतिस्पर्धा मानसिक थकान पैदा करती है। मेडिटेशन तनाव को कम करने का सबसे सरल और प्रभावी उपाय है। ध्यान करने वाला नेता दबाव में भी धैर्य बनाए रखता है। वह कठिन परिस्थितियों में घबराने के बजाय शांत रहकर समाधान खोजता है। यही धैर्य टीम को भी स्थिरता और विश्वास देता है। सफल

नेतृत्व केवल परिणामों से नहीं, बल्कि मूल्यों से भी मापा जाता है। मेडिटेशन व्यक्ति को आत्ममंथन की ओर ले जाता है, जिससे नैतिकता और ईमानदारी मजबूत होती है। ध्यान के अभ्यास से अहंकार कम होता है और सेवा-भाव बढ़ता है। ऐसा नेता सत्ता को अधिकार नहीं, बल्कि जिम्मेदारी समझता है। यही मूल्य-आधारित नेतृत्व समाज और संगठन दोनों को स्थायित्व देता है। आज विश्व की कई बड़ी कंपनियाँ और संस्थान अपने नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मेडिटेशन को शामिल कर रही हैं। कारण स्पष्ट है—मेडिटेशन न केवल कार्यक्षमता बढ़ाता है, बल्कि नेतृत्व को मानवीय और संतुलित बनाता है। राजनीति, प्रशासन, शिक्षा, व्यवसाय या सामाजिक क्षेत्रकृहर जगह वही नेता सफल होते हैं जो बाहरी सफलता के साथ आंतरिक शांति भी बनाए रखते हैं। मेडिटेशन नेतृत्व को कमजोर नहीं, बल्कि गहराई देता है। यह नेता को आक्रामक नहीं, बल्कि सजग बनाता है। सफल नेतृत्व की वास्तविक शक्ति ऊँची आवाज या कठोर निर्णयों में नहीं, बल्कि शांत मन, स्पष्ट सोच और संवेदनशील हृदय में निहित है। अंततः, जो व्यक्ति स्वयं को जीत लेता है, वही दूसरों का मार्गदर्शन सही दिशा में कर सकता है। मेडिटेशन इसी आत्म-विजय का मार्ग है और यही सफल नेतृत्व की सबसे बड़ी आंतरिक शक्ति है।



इस माइंडसेट में आप समस्याओं पर नहीं, बल्कि समाधानों पर ध्यान देते हैं और बदलाव को अवसर की तरह अपनाते हैं

सी-सूट रिक्लूटर ऐसे उम्मीदवार नहीं ढूँढते, जो सिर्फ अच्छा अनुभव रखते हों, बल्कि ऐसे लीडर चाहते हैं, जो आगे की सोच और बड़ी तस्वीर समझने की क्षमता रखते हों। इसलिए सबसे पहले आपको रणनीतिक तरीके से सोचना सीखना होगा और अपने विचारों को बोलने व लिखने के जरिये

सी-सूट माइंडसेट अपनाएं

लोगों तक पहुंचाना होगा, ताकि आपकी पहचान एक विचारशील लीडर के रूप में हो। जिस पद के लिए आप आवेदन कर रहे हैं, उसके लिए आपकी एक स्पष्ट छवि दिखनी चाहिए। इंटरव्यू और विभिन्न आकलनों के लिए पहले से अ'छी तैयारी करें और मजबूत नेटवर्किंग के जरिये यह भरोसा दिलाएं कि आप कंपनी के लिए कम जोखिम और अधिक प्रभाव देने वाले उम्मीदवार हैं।

सफलता के लिए प्रोफेशनल ब्रांडिंग

सी-सूट तक पहुंचने के लिए रोजमर्रा के काम से आगे सोचकर संगठन की दीर्घकालिक रणनीति पर ध्यान दें। अपनी विशेषज्ञता दिखाने के लिए लेख लिखें, कार्यक्रमों में बोलें या पेशेवर मंचों पर सक्रिय रहें, जिससे आपकी पहचान एक विचारशील लीडर के रूप में बने। साथ ही मजबूत लिंकडइन प्रोफाइल, सही

निर्णय व भावनात्मक समझ जैसे नेतृत्व गुणों को अपने व्यवहार में दिखाएं।

रणनीतिक विजन और मूल्य प्रस्तुति

कंपनी की चुनौतियों और अवसरों को समझते हुए एक छोटा-सा विजन मेमो तैयार करें, जिसमें आपकी रणनीतिक सोच साफ दिखाई दे। साथ ही यह स्पष्ट करें कि इस भूमिका और कंपनी के लिए आप क्या अलग और खास मूल्य लेकर आए हैं। अपनी पिछली उपलब्धियों को इस तरह प्रस्तुत करें कि वे यह स्पष्ट रूप से दिखाएं कि आप नई भूमिका में भविष्य में कैसे सफल परिणाम दे सकते हैं।

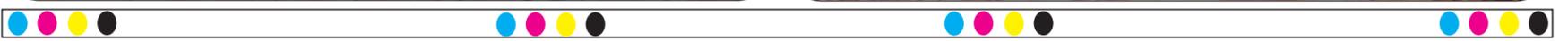
कठोर मूल्यांकन के लिए तैयार रहें

चयन प्रक्रिया के लिए पहले से तैयारी करें, जिसमें साइकोमेट्रिक टेस्ट, केस स्टडी और नेतृत्व से जुड़े आकलन शामिल हो सकते हैं। इंटरव्यू के दौरान

अपनी क्षमताओं और कंपनी की संस्कृति से मेल को दिखाने के लिए अपनी असली और ठोस कहानियाँ तैयार रखें, जैसे स्टार तरीके से अनुभव बताना। साथ ही कंपनी, उसके सीईओ और पूरी कंपनी को समझने के लिए भरोसेमंद स्रोतों से भी अच्छी तरह जानकारी जुटाएं।

उपयोगी जानकारी साझा करें

भर्तीकर्ताओं तक पहुंचने के लिए कार्यकारी सर्च फर्मों और कंपनी से जुड़े लोगों के साथ मजबूत संबंध बनाएं और बातचीत में उपयोगी जानकारी साझा करें। ऐसे भरोसेमंद संदर्भ तैयार रखें, जो आपके कौशल, नेतृत्व और प्रभाव के बारे में स्पष्ट रूप से बता सकें। अपनी उपलब्धियों को आंकड़ों और ठोस नतीजों के साथ प्रस्तुत करें, ताकि आपका प्रभाव साफ दिखे।



महाविद्यालय की छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिता में किया शानदार प्रदर्शन

भिवानी। महाविद्यालय की छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर उल्लेखनीय सफलता अर्जित कर महाविद्यालय एवं क्षेत्र का नाम रोशन किया है। छात्रा रिया ने दिल्ली में आयोजित ओपन नेशनल ताईक्रान्डो चैम्पियनशिप में सिल्वर पदक जीतकर ये गौरवावित उपलब्धि हासिल की। ज्ञात रहें कि इस प्रतियोगिता में देशभर की प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया था। कैथल में आयोजित हुई डीजीएचई इंटरकॉलेजिएट स्टेट बॉक्सिंग चैम्पियनशिप में महाविद्यालय की बीए प्रथम वर्ष की छात्रा भूमिका ने सिल्वर, बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा पायल ने ब्रांच मैडल जीतकर अपनी मेहनत का लौहा मनवाया। इस शानदार जीत के पश्चात महाविद्यालय पहुंची इन छात्राओं को सम्मानित किया गया। इस मौके पर



विजयी छात्राओं को अपना आशीर्वाचन देते हुए महाविद्यालय प्रबंधकारिणी के महासचिव अशोक बुवानीवाला ने कहा

कि महाविद्यालय की छात्राएं आज हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रही हैं। खेलों में मिली यह सफलता उनके

आत्मविश्वास, अनुशासन और कठिन परिश्रम का परिणाम है। हमारा उद्देश्य छात्राओं को शिक्षा के साथ-साथ खेलों में

भी बेहतर अवसर प्रदान करना है, ताकि वे राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महाविद्यालय और प्रदेश का नाम रोशन कर सकें।

महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने छात्राओं की इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह सफलता महाविद्यालय के लिए गौरव का विषय है और इससे अन्य छात्राओं को भी प्रेरणा मिलेगी और खेलकूद जैसी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करेगी।

इस अवसर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विभाग की कॉर्डिनेटर डॉ. रेनु, विभागाध्यक्ष, डॉ. मोनिका सैनी, प्राध्यापिका नेहा तथा कोच सीता व भारती ने भी रिया को इस शानदार सफलता पर शुभकामनाएं दी।

Oath-Taking Ceremony Organized on National Voters' Day



On the occasion of the 16th National Voters' Day, an oath-taking ceremony was successfully organized jointly by the Voter Education Cell and the Department of Political Science with the objective of promoting democratic values and encouraging responsible citizenship among students.

The programme was conducted to create awareness about the importance of voting in a democratic system and to motivate young voters to actively participate in the electoral process. Students were sensitized about their constitutional rights and duties, highlighting the role of informed and ethical voting in strengthening democracy.

During the ceremony, students took a pledge to uphold democratic principles, exercise their right to vote without fear or prejudice, and contribute towards free, fair, and peaceful elections. The oath emphasized commitment to national integrity, unity, and the demo-

cratic ethos of the country.

Faculty members addressed the gathering and stressed that voting is not only a right but also a moral responsibility of every citizen. They encouraged students to become informed voters, remain aware of social and political issues, and play an active role in nation-building.

The programme witnessed enthusiastic participation from students and faculty members, reflecting a strong commitment towards democratic awareness. The event concluded with a message reinforcing the significance of youth participation in elections for a vibrant and inclusive democracy.

The joint initiative by the Voter Education Cell and the Department of Political Science proved to be meaningful and impactful, aligning with the spirit of National Voters' Day and fostering a sense of civic responsibility among the young generation.

रविना ने कविता पाठ में प्रथम स्थान हासिल कर बढ़ाया महाविद्यालय का मान

भिवानी। शैक्षणिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही महाविद्यालय की छात्राओं ने एक बार फिर महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। स्थानीय वैश्य महाविद्यालय में आयोजित इंटर कॉलेज प्रतियोगिता में विभिन्न महाविद्यालयों से आई छात्राओं के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मिली। इस प्रतियोगिता में आदर्श महिला महाविद्यालय की छात्रा रविना ने कविता पाठ प्रतियोगिता में अपनी प्रभावशाली प्रस्तुति से निर्णायकों व दर्शकों को मंत्रमुग्ध करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। कविता पाठ प्रतियोगिता के दौरान रविना ने भावपूर्ण, सशक्त और आत्मविश्वास से भरपूर काव्य प्रस्तुति दी, जिसने श्रोताओं के साथ-साथ निर्णायक मंडल को भी गहराई से प्रभावित किया। रविना की इस उल्लेखनीय उपलब्धि से महाविद्यालय परिसर में उन्हें सम्मानित



किया गया। महाविद्यालय प्रबंधकारिणी के महासचिव अशोक बुवानीवाला ने कहा कि यह उपलब्धि शिक्षकों के मार्गदर्शन और निरंतर अभ्यास का परिणाम है। हमें गर्व है कि महाविद्यालय की छात्रा साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़कर महाविद्यालय का नाम रोशन कर रही है। महाविद्यालय

प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने रविना को इस सफलता पर बधाई दी और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि अन्य छात्राओं के लिए भी प्रेरणास्रोत बनेगी तथा उन्हें साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करेगी।

'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में गणित के अनुप्रयोग' विषय पर लेक्चर आयोजित



महाविद्यालय के गणित विभाग द्वारा प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के कुशल मार्गदर्शन में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में गणित के अनुप्रयोग' विषय पर एक एक्सटेंशन लेक्चर का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में एन.आर.एस. गवर्नमेंट कॉलेज, रोहतक के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अमित

सहगल ने शिरकत की। डॉ. सहगल ने अपने संबोधन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में गणित की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार गणितीय मॉडल, एल्गोरिद्म, डेटा एनालिसिस और प्रायिकता सिद्धांत एआई तकनीकों की आधारशिला हैं।

आदर्श महिला महाविद्यालय में 'रन फॉर स्वदेशी' कार्यक्रम का आयोजन

भिवानी। राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर स्वामी विवेकानंद जयंती के उपलक्ष्य में महाविद्यालय की एन.एस.एस. की दोनों इकाइयों द्वारा 'रन फॉर स्वदेशी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग को प्रोत्साहित करना, आत्मनिर्भर भारत की भावना का विकास करना, शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा स्वामी विवेकानंद के राष्ट्र निर्माण से जुड़े विचारों से छात्राओं को प्रेरित करना रहा। इस अवसर पर महाविद्यालय की एन.एस.एस. की दोनों इकाइयों की सभी स्वयंसेविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अलका मित्तल ने 'रन फॉर स्वदेशी' यात्रा को हरी



झंडी दिखाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने छात्राओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि स्वदेशी दौड़

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक सशक्त कदम है। स्वदेशी को अपनाने का अर्थ अपने

देश के उद्यमियों को सशक्त बनाना है तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग से हम अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र निर्माण में योगदान

देते हैं। कार्यक्रम के दौरान हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. रमाकांत ने स्वामी विवेकानंद के जीवन, उनके आदर्शों एवं समाज से उनके गहरे जुड़ाव पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद का सपना था कि भारत का युवा न केवल शारीरिक रूप से सक्षम हो, बल्कि सेवा, समर्पण और राष्ट्रहित के कार्यों में भी अग्रणी भूमिका निभाए। कार्यक्रम का आयोजन एन.एस.एस. यूनिट कार्यक्रम अधिकारी डॉ. नूतन शर्मा एवं डॉ. दीपू सैनी के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर यूनिट कार्यक्रम सदस्य डॉ. शकुंतला, डॉ. रितिक चैधरी तथा प्राध्यापिकाएं तान्या एवं प्रियंका भी उपस्थित रही।

नौकरी और बेरोजगारी के बीच की स्थिति

एक तरफ पद खाली पड़े हैं, दूसरी ओर कुछ नौकरियां करने में युवाओं की दिलचस्पी नहीं है। यह स्थिति किसी एक सरकार की देन नहीं है। यह समस्या बढ़ती ही जा रही है।

चारों तरफ अ'छी खबरें सुनने को मिल रही हैं। खुदरा महंगाई की दर 1.0x प्रतिशत है। वित्त वर्ष 2025-26 में जीडीपी की वृद्धि दर 7.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है। मुझे लगता है कि इसमें एक बात और जोड़ी जानी चाहिए कि भारत में बेरोजगारी नहीं है। कम से कम वैसी तो नहीं है, जिसकी हमें चिंता करनी चाहिए। आंकड़े बताते हैं कि सरकारी और अर्द्ध-सरकारी क्षेत्र में लाखों पद खाली पड़े हैं, लेकिन उन्हें भरने की चिंता किसी को नहीं है। आठवां वेतन आयोग आने के बाद लोगों की स्थिति और बेहतर हो जाएगी। महंगाई भत्ते, वार्षिक वेतन वृद्धि, पदोन्नति, नौकरी की सुरक्षा, चिकित्सा सुविधाएं, एचआरए, परिवहन भत्ता व अन्य भत्ते, अवकाश सुविधाएं, अग्रिम और ऋण तथा एकीकृत पेंशन योजना, जैसी सुविधाओं के होने के बावजूद युवा पुरुष और महिलाएं इन सरकारी स्वीकृत पदों को स्वीकार करने के क्या इच्छुक नहीं हैं। खाली पदों को भरने में दिलचस्पी न दिखाना तो इसी बात को दर्शाता है। इस स्थिति से आप और क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं, सिवाय इसके कि भारत में बेरोजगारी नहीं है। शिक्षा मंत्रालय के अनुसार, एक अप्रैल 2024 तक केंद्रीय विश्वविद्यालयों में शिक्षण के स्वीकृत पद 18940 है और रिक्त पद 5060 है। इसी प्रकार गैर-शिक्षण के स्वीकृत पद 5640 है और रिक्त पद

16719 है। आंकड़ों के हिसाब से केंद्रीय विश्वविद्यालयों में 27 प्रतिशत शिक्षण पद और 47 प्रतिशत गैर-शिक्षण पद खाली थे। जून 2025 तक केंद्रीय विद्यालय संगठन में 7765 और नवोदय विद्यालय समिति में 4x2 शिक्षण पद खाली थे। फिर भी हमें आश्चर्य किया जाता रहा है कि भारत में शिक्षा व्यवस्था अ'छी तरह से चल रही है।

आंकड़ों की जुबानी

इस तरह के उदाहरण पूरे देश में देखे जा सकते हैं। केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में कांस्टेबल के 25487 पद रिक्त हैं। राजस्थान में एलडीसीध्वलक ग्रेड-दो के 10644 पद खाली हैं। बिहार में 12199 पद खाली हैं। उत्तर प्रदेश में कांस्टेबल के 60244 पद रिक्त हैं। तमिलनाडु में स्टाफ नर्सों के 2255 पद खाली हैं। गौरतलब है कि इन पदों के लिए आवेदन करने वाले आम तौर पर निम्न व मध्यम वर्ग के वह छात्र-छात्राएं होते हैं, जिन्होंने हाल ही में 12वीं या स्नातक की पढ़ाई पूरी की है। उ'च शिक्षा की तरफ जाएं तो 21 एम्स में 485 फैकल्टी तैनात हैं, जबकि 1731 पद खाली चल रहे हैं। ओडिशा रा'य के केंद्रपाड़ा जिले में डॉक्टर और पैरा मेडिकल स्टाफ के 805 पद खाली हैं। भरे पदों की संख्या 1087 है।

बैंकिंग सेक्टर को प्रतिष्ठित और आकर्षक माना जाता है। 12 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में कर्मचारियों की स्थिति पर गौर करें तो 4x0599 अधिकारी कार्यरत है और 17500 पद रिक्त है, इसी कड़ी में 24x817 क्लर्क कार्यरत है और 12861 पद रिक्त है तथा 84092 अधीनस्थ कर्मचारी है और 2206 पद रिक्त है।



प्रधानमंत्री इंटरशिप योजना की शुरुआत अक्टूबर 2024 में की गई थी। एक अखबार में दो दिसंबर, 2025 को प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, दो चरणों में कंपनियों ने कुल 165000 इंटरशिप ऑफर दिए, लेकिन उनमें से केवल 20 प्रतिशत को ही स्वीकार किया गया। ऑफर स्वीकार करने वालों में पांच में से एक ने इंटरशिप पूरी होने से पहले उसे छोड़ दिया। इस तरह लगभग 140000 ऑफर किसी ने स्वीकार नहीं किए। भारत में बेरोजगारी को समस्या न मानने वाले, यहां निराशा हो सकते हैं। हमें निष्पक्षता के साथ यह स्वीकार करना होगा कि एक ओर बढ़ी संख्या में पद खाली पड़े हैं और दूसरी ओर कुछ नौकरियों में युवाओं की दिलचस्पी नहीं है। वह उन्हें करना नहीं

चाहते। यह स्थिति केवल भाजपा सरकार की देन नहीं है। यह समस्या कई सरकारों और कई दशकों से चली आ रही है। हां, दो घटनाओं ने इस स्थिति को और गंभीर बना दिया है। इनमें पहली घटना-नोटबंदी। यह एक थोपी गई घटना थी। जैसा कि मैं पहले भी लिख चुका हूँ, यह असलियत में नोटबंदी थी ही नहीं, क्योंकि किसी भी मुद्रा को स्थायी रूप से अमान्य कर प्रणाली से बाहर नहीं किया गया। यह दरअसल पुराने नोटों के बदले नए नोट देने की एक योजना भर थी। जितनी मुद्रा बाजार में थी, उतनी जल्द ही बाजार में लौट आई, बल्कि उससे भी आगे निकल गई। चार नवंबर, 2016 को प्रचलन में मुद्रा का मूल्य 17.97 लाख करोड़ रुपये था, दिसंबर 2025 के अंत तक

यह दोगुने से भी अधिक बढ़कर 39.24 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया। नोटबंदी का दुष्प्रभाव यह रहा कि हजारों छोटे और मध्यम उद्यम बंद हो गए और लाखों नौकरियां चल गईं हालांकि सरकार इससे इनकार करती है। लेकिन ऑल इंडिया व्यापार मंडल के अनुसार, 2016 में देश में 6.25 करोड़ छोटे व्यवसाय थे, जिनमें से लगभग 48 प्रतिशत पिछले एक दशक में बंद हो चुके हैं। दूसरी घटना-कोविड महामारी है। 2022 में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, 14 प्रतिशत एमएसएमई महामारी के कारण स्थायी रूप से बंद हो गए। एक सरकारी रिपोर्ट बताती है कि जुलाई 2020 से फरवरी 2025 के बीच 75000 पंजीकृत एमएसएमई बंद हुए (मतलब यह प्रभाव कोविड काल से आगे तक गया)। यूएनसीटीएडी का अनुमान है कि फरवरी 2022 तक भारत में लगभग 47 प्रतिशत एमएसएमई अस्थायी या स्थायी रूप से बंद हो चुके थे। इन आंकड़ों की पुष्टि भले ही न हो, लेकिन स'चाई से मेल खाते हैं। मनरेगा को एक ऐसी योजना से बदलना जो मांग आधारित नहीं है, जिसमें रोजगार की गारंटी नहीं है और जो पैसे की कमी से जूझ रही है, ग्रामीण गरीबों की स्थिति को और खराब बना देगा। उन्हें बेरोजगारी या अर्द्ध-बेरोजगारी का सामना करना पड़ सकता है। इससे ग्रामीण परिवारों, विशेषकर महिलाओं की अतिरिक्त आय का स्रोत छिन सकता है। यह मानना कि बेरोजगारी कोई बड़ी समस्या नहीं है, सच से मुंह फेरना है। सरकार अपनी प्रशंसा में डूबी है और बेरोजगारी देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा रही है।

जब बोलना हो बगैर तैयारी के

यह डरावना लग सकता है, लेकिन सही दृष्टिकोण और विश्वास के साथ संचार को प्रभावी बनाया जा सकता है किसी भी मंच पर बोलते समय श्रोताओं का ध्यान आकर्षित करना और अपनी बात प्रभावी ढंग से रखना बेहद जरूरी होता है, लेकिन हर अवसर पर पहले से तैयारी करना संभव नहीं होता। ऐसे में बिना तैयारी के बोलने का कौशल सीखना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में शांत रहकर विषय का मूल समझना, स्पष्ट संदेश देना और आत्मविश्वास के साथ बोलना आपको कम समय में भी श्रोताओं पर प्रभावशाली छाप छोड़ने में मदद करता है। बिना तैयारी के बोलना डरावना लग सकता है, लेकिन सही दृष्टिकोण अपनाकर इसे प्रभावी बनाया जा सकता है। इस दौरान आपको सर्वश्रेष्ठ होना नहीं, बल्कि शांत रहकर, साफ सोच के साथ और आत्मविश्वास से अपनी बात रखना है।



पूरे विषय में उलझने के बजाय सवाल या मुद्दे के मुख्य बिंदु को जल्दी समझें और उसी पर ध्यान केंद्रित करें, क्योंकि स्पष्ट और केंद्रित बात ही आपके संदेश को प्रभावी बनाती है।

बात को हिस्सों में बाँटें

अपने विचारों को स्पष्ट रखने के लिए एक सरल ढांचा अपनाना बहुत मददगार होता है। इसके लिए अपनी बात को तीन हिस्सों में बाँटें। शुरुआत में, विषय से जुड़ी कोई सामान्य या परिचयात्मक बात रखें, जिससे श्रोता आपसे जुड़ सकें। मध्य भाग में एक या दो मुख्य विचार या छोटे उदाहरण प्रस्तुत करें, ताकि आपकी बात ठोस और समझने योग्य बने। और अंत में एक संक्षिप्त निष्कर्ष या सीख के साथ अपनी बात समाप्त करें,

जिससे श्रोताओं को स्पष्ट संदेश का एहसास हो।

आम शब्दों का उपयोग करें

किसी भी बातचीत में सरल और स्पष्ट भाषा सबसे प्रभावी होती है। भारी शब्दों, कठिन वाक्यों या दिखावटी भाषा से बचना चाहिए, क्योंकि ऐसी भाषा न केवल बोलने वाले को उलझा सकती है, बल्कि श्रोताओं के लिए भी समझना कठिन हो जाता है। रोजमर्रा के शब्दों का उपयोग करें ताकि आपके विचार सहज और आत्मविश्वासी ढंग से सामने आएँ और श्रोता आसानी से समझ सकें।

स्वीकार करें

बिना तैयारी के बोलते समय ईमानदारी और आत्मविश्वास दिखाना बहुत महत्वपूर्ण होता है। यदि आपको किसी विषय की पूरी जानकारी नहीं है, तो उसे स्वीकार करने में संकोच नहीं करना चाहिए, क्योंकि श्रोता दिखावे से 'यादा स'चाई को पसंद करते हैं। साथ ही, सकारात्मक प्रभाव छोड़ने के लिए केवल शब्द ही नहीं, बल्कि आपका व्यवहार भी अहम भूमिका निभाता है। आंखों से संपर्क बनाए रखना, आवाज को शांत तथा स्वाभाविक ढंग से रखना, आपकी बात को अधिक प्रभावी बनाता है और श्रोताओं के मन में आपके प्रति विश्वास पैदा करता है।

बदलाव: डिजिटल दौर में लोग रोज 140 बार चेक करते हैं मोबाइल

डीप रीडिंग बढ़ा रही सोचने-समझने की ताकत, तनाव भी होता है कम

आज के डिजिटल दौर में जब हर कोई दिनभर में औसतन 140 बार मोबाइल चेक करता है और करीब साढ़े 4 घंटे स्क्रीन पर बिताता है, ऐसे में डीप रीडिंग यानी किताब को गहराई से पढ़ने की आदत जरूरी होती जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि डीप रीडिंग न केवल गलत जानकारी से बचने में मदद करती है, बल्कि तनाव और अकेलेपन को भी कम करती है। क्या है डीप रीडिंग- डीप रीडिंग का मतलब है किसी लेख, किताब या जानकारी को ध्यान से, सोच समझकर और भावनात्मक रूप से जुड़कर पढ़ना। इसमें पाठक सिर्फ जानकारी नहीं लेता, बल्कि उसके अर्थ, संदर्भ व भावनाओं को भी समझता है। वहीं, सोशल मीडिया पर स्क्रॉलिंग करते हुए हम जानकारी को सतही तौर पर लेते हैं, जिससे भ्रम और गलतफहमी बढ़ती है। सोशल मीडिया स्क्रॉलिंग से परे, अब जर्मनी, फिनलैंड और जापान जैसे देशों के स्कूलों और विश्वविद्यालयों ने लॉन्ग-फॉर्म रीडिंग को अनिवार्य बना दिया है। अखबारों के विश्लेषणात्मक कॉलम पढ़ने की आदत



डाली जा रही है। लाइब्रेरियों में नॉवेल्स रीडिंग क्लब विकसित किया जा रहा है। बाधा-सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म यूजर को वैसी ही पोस्ट दिखाते हैं, जो उन्होंने पहले देखी या पसंद की हों। बार-बार एक-सी जानकारी मिलने से वह सच लगने लगती है, भले ही वह गलत हो। इसे इल्यूज़री टुथ इफेक्ट कहते हैं। स्टडी के अनुसार, जो ब'चे 2 से 9 साल की उम्र के बीच पढ़ना शुरू करते हैं और हर हफ्ते करीब 12 घंटे पढ़ते हैं, उनके दिमाग की संरचना बेहतर होती है। इससे उनकी याददाश्त, बोलने की क्षमता और बेहतर होती है।

पढ़ने की आदत कैसे डालें: विशेषज्ञों का कहना है कि शुरुआत छोटी चीजों से करें, जैसे कविताएं, लघु कहानियां या निबंध। फिर धीरे-धीरे उपन्यास या नॉन-फिक्शन किताबों की ओर बढ़ें।

मनुष्य की पहचान अक्सर उसके नाम, पद, धन या उपलब्धियों से की जाती है, लेकिन वास्तविक जीवन में किसी व्यक्ति की पहली और सबसे स्थायी पहचान उसका व्यवहार होता है। सुंदर चेहरा, ऊँचा ओहदा या प्रभावशाली व्यक्तित्व पहली मुलाकात में आकर्षण पैदा कर सकता है, परंतु वही आकर्षण व्यवहार के बिना क्षणिक सिद्ध होता है। व्यवहार वह आईना है, जिसमें व्यक्ति का संस्कार, सोच और चरित्र स्पष्ट दिखाई देता है। इसलिए कहा भी गया है -शब्द नहीं, व्यवहार बोलता है।- यही कारण है कि लोग यह याद नहीं रखते कि आपने क्या कहा, बल्कि यह अवश्य याद रखते हैं कि आपने उनके साथ कैसा व्यवहार किया। व्यवहार किसी व्यक्ति के भीतर छिपे मूल्यों को प्रकट करता है। संकट के समय में धैर्य, सफलता में विनम्रता और असहमति में शालीनताकृये सभी अ'छे व्यवहार की पहचान हैं। जो व्यक्ति हर परिस्थिति में संतुलित और सम्मानजनक व्यवहार करता है, वही समाज में स्थायी स्थान बनाता है। अक्सर देखा गया है कि

अत्यधिक प्रतिभाशाली लोग भी खराब व्यवहार के कारण स्वयं को सीमित कर लेते हैं, जबकि साधारण योग्यता वाले लोग अपने अ'छे व्यवहार से असाधारण सम्मान प्राप्त कर लेते हैं। परिवार हो, मित्रता हो या कार्यस्थलकृहर संबंध व्यवहार की नींव पर टिका होता है। कठोर शब्द, अहंकार और असंवेदनशीलता रिश्तों को कमजोर कर देती है, जबकि मधुर भाषा, सुनने की क्षमता और सम्मान उन्हें मजबूत बनाती है। एक छोटा सा -धन्यवाद-, -क्षमा करें- या -आपकी बात समझ में आती है- रिश्तों में बड़ी दूरियों मिटा सकता है। व्यवहार वह सेतु है, जो दिलों को जोड़ता है। आज के प्रतिस्पर्धी युग में सफलता केवल योग्यता से नहीं, बल्कि व्यवहारिक बुद्धिमत्ता से मिलती है। कार्यस्थल पर जो व्यक्ति सहकर्मियों का सम्मान करता है,

व्यवहार है व्यक्तित्व का सच्चा आईना



टीम भावना रखता है और आलोचना को सहजता से स्वीकार करता है, वही स'चा लीडर बनता है। ग्राहक, सहयोगी और अधिकारी हर जगह सबसे पहले व्यक्ति के

व्यवहार को ही परखते हैं। कई बार अक्सर इसलिए नहीं मिलते क्योंकि योग्यता की कमी होती है, बल्कि इसलिए कि व्यवहार में कठोरता या अहंकार झलकता है। व्यवहार यह भी दर्शाता है कि व्यक्ति किन संस्कारों में पला-बढ़ा है। बड़ों के प्रति आदर, छोटे के प्रति स्नेह और कमजोर के प्रति संवेदनाकृये संस्कार व्यवहार के माध्यम से ही प्रकट होते हैं। अ'छ व्यवहार सिखाया नहीं जाता, वह देखा और अपनाया जाता है। यही कारण है कि परिवार और समाज की भूमिका व्यवहार निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। आज सोशल मीडिया और डिजिटल संवाद के युग में व्यवहार की परिभाषा और भी व्यापक हो गई है। बिना सोचे-समझे लिखे गए शब्द, कटु टिप्पणियाँ और असहिष्णु भाषा व्यक्ति की छवि को क्षणों में धूमिल कर सकती हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी वही व्यक्ति

सम्मान पाता है, जो असहमति में भी मर्यादा बनाए रखता है। ऑनलाइन व्यवहार भी अब व्यक्ति की सार्वजनिक पहचान बन चुका है। अ'छ व्यवहार केवल दूसरों के लिए नहीं, बल्कि स्वयं के लिए भी लाभकारी होता है। यह मानसिक शांति, सकारात्मक सोच और आत्मसंतोष प्रदान करता है। जो व्यक्ति विनम्र होता है, वह सीखने के लिए सदैव खुला रहता है और निरंतर आगे बढ़ता है। व्यवहार बदलकर व्यक्ति अपने जीवन की दिशा बदल सकता है। यह सबसे सरल, लेकिन सबसे प्रभावी आत्म-विकास का साधन है। अंततः व्यवहार ही वह पहचान है जो बिना परिचय के भी व्यक्ति को पहचान दिला देती है। पद, धन और प्रतिष्ठा समय के साथ बदल सकते हैं, लेकिन व्यवहार की छाप लंबे समय तक बनी रहती है। यदि हम चाहते हैं कि हमें सम्मान, विश्वास और अपनापन मिले, तो हमें सबसे पहले अपने व्यवहार को देखना होगा। क्योंकि संसार में मिलने वाली पहली प्रतिक्रिया हमारे शब्दों से नहीं, हमारे व्यवहार से तय होती है।

आदर्श महिला महाविद्यालय में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया 77वां गणतंत्र दिवस

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय परिसर में 77वां गणतंत्र दिवस उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष अजय गुप्ता तथा समिति के सदस्यों के कर-कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई, जिसके बाद पूरा परिसर देशभक्ति के रंग में रंग गया। मुख्य अतिथि अजय गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि गणतंत्र दिवस केवल एक तिथि नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की आत्मा का प्रतीक है। हमारा संविधान हमें समानता, स्वतंत्रता और न्याय के अधिकार देता है,

साथ ही नागरिक कर्तव्यों का बोध भी कराता है।

उन्होंने छात्राओं से संविधान के मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने और समाज के प्रति जिम्मेदार भूमिका निभाने का आह्वान किया। महाविद्यालय के महासचिव अशोक बुवानीवाला ने कहा कि गणतंत्र का वास्तविक अर्थ नागरिकों को प्राप्त अधिकारों और जिम्मेदारियों से जुड़ा है। 26 जनवरी वह दिन है, जब भारत के नागरिकों को सच्चे अर्थों में अपनी पहचान और अधिकार मिले। इस अवसर पर प्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति डॉ. सुरेश गुप्ता ने स्वस्थ जीवनशैली पर जोर देते हुए कहा कि प्रत्येक

व्यक्ति को वर्ष में कम से कम एक बार संपूर्ण स्वास्थ्य जांच अवश्य करवानी चाहिए। उन्होंने संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और सकारात्मक सोच को स्वस्थ समाज की आधारशिला बताया।

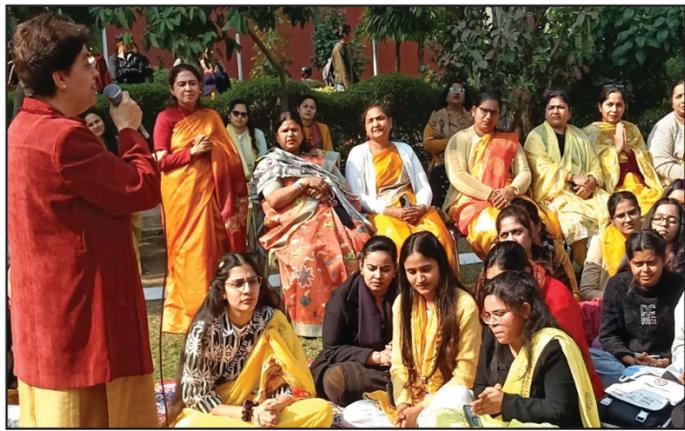
महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने अपने संदेश में कहा कि एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हमारा दायित्व है कि हम संविधान के आदर्शों को अपने आचरण में उतारें और समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए कार्य करें। उन्होंने छात्राओं को शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को भी जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने देशभक्ति नृत्य, समूह गायन,

सितार वादन और कविता पाठ की आकर्षक प्रस्तुतियां दीं। इन प्रस्तुतियों ने उपस्थित सभी अतिथियों और दर्शकों में देशप्रेम की भावना को और प्रबल किया।

आयोजन समिति में डॉ. अपर्णा बत्रा, डॉ. रेणु, डॉ. नूतन, डॉ. मोनिका सैनी, डॉ. निशा शर्मा और प्राध्यापिका नेहा का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में सुंदरलाल अग्रवाल, पवन केडिया, नंदकिशोर अग्रवाल, पवन बुवानीवाला, विजय किशन धारेडुवाला सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। समापन राष्ट्र के प्रति समर्पण और एकता के संकल्प के साथ किया गया।



बसंत पंचमी की पूर्व संध्या पर मेहनत के रंग से संवरते हैं सपने भजन एवं प्रसाद वितरण कार्यक्रम



भिवानी। बसंत पंचमी की पूर्व संध्या पर आदर्श महिला महाविद्यालय में भक्तिभाव एवं सांस्कृतिक गरिमा से ओत-प्रोत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ज्ञान, कला एवं संगीत की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की विधिवत पूजा-अर्चना की गई। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति सदस्य रंजना बुवानीवाला ने अपने संबोधन में कहा कि बसंत पंचमी केवल एक पर्व नहीं, बल्कि यह जीवन में ज्ञान, नवचेतना और सकारात्मक ऊर्जा के आगमन का प्रतीक है। इस दिन प्रकृति में नवचेतन का अद्भूत संगम देखने को मिलता है। यह पर्व हमें अज्ञानता से ज्ञान की ओर अग्रसर करता है। कार्यक्रम डॉ.

रश्मि बजाज द्वारा दी गई कृष्ण भक्ति पर भजनों की प्रस्तुति से पूर्ण महाविद्यालय भक्तिमय हो गया।

महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने कहा कि माँ सरस्वती की प्रेरणा स्वरूप आदर्श महिला महाविद्यालय का उद्देश्य केवल शैक्षणिक डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि छात्राओं को संस्कारयुक्त, आत्मनिर्भर एवं समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनाना है। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष विधिवत पूजन एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। डॉ. अपर्णा बत्रा एवं डॉ. नूतन शर्मा के संयोजन में आयोजित इस कार्यक्रम में कृष्ण भक्ति से सराबोर भजन प्रस्तुति एवं प्रसाद वितरण ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

हर इंसान सपने देखता है। कोई खुले आसमान में उड़ने का सपना देखता है, तो कोई जमीन पर अपनी मजबूत पहचान बनाने का। लेकिन अक्सर हम यह भूल जाते हैं कि सपने कोई जादू नहीं होते जो रातों-रात पूरे हो जाएँ। सपनों को सच में बदलने के लिए समय, धैर्य और निरंतर मेहनत की आवश्यकता होती है। सच तो यह है कि सपनों की असली खूबसूरती उनके पूरे होने में नहीं, बल्कि उन्हें पूरा करने की यात्रा में छिपी होती है। आज की तेज रफ्तार दुनिया में हर कोई जल्दी सफलता चाहता है। सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली चमक-दमक हमें यह भ्रम देती है कि सफलता अचानक मिल जाती है। लेकिन इस चमक के पीछे छिपी अनगिनत असफलताएँ, त्याग और संघर्ष अक्सर नजर नहीं आते। कोई भी बड़ा सपना मेहनत की नींव पर ही खड़ा होता है। सपने वहीं पूरे होते हैं जिन्हें केवल सोते समय नहीं, बल्कि जागते हुए भी देखा जाए। जब सपना हमारे भीतर इतनी गहराई तक उतर जाए कि वह हमारी सोच, दिनचर्या और निर्णयों का हिस्सा बन जाए, तभी वह साकार होने की दिशा में बढ़ता है। सपने देखने वाला व्यक्ति तभी आगे बढ़ता है, जब वह अपने आराम के दायरे से बाहर निकलकर मेहनत का रास्ता चुनता है। मेहनत कोई एक दिन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि रोज का संकल्प है। कई बार परिणाम देर से मिलते हैं, लेकिन हर छोटा प्रयास एक बड़ा कदम बन जाता है। असफलताएँ रास्ते में आती हैं, मन टूटता है, आत्मविश्वास डगमगाता है, लेकिन यही वे क्षण होते हैं जो इंसान को मजबूत बनाते हैं।



जिस तरह क'चे रंग धूप और समय के बिना गहराई नहीं पाते, उसी तरह सपने भी बिना मेहनत के रंगीन नहीं होते। मेहनत वह रंग है, जो सपनों को पहचान देता है। इतिहास गवाह है कि जिन्होंने हार मान ली, उनके सपने वहीं रुक गए।

लेकिन जिन्होंने हर गिरावट के बाद खुद को संभाला, वही सफल हुए। संघर्ष किसी की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी कहानी का सबसे मजबूत अध्याय होता है। जब हम कठिन परिस्थितियों से लड़ते हैं, तभी हमें अपने भीतर छिपी क्षमताओं का एहसास होता है। मेहनत के साथ-साथ धैर्य और आत्मविश्वास भी जरूरी है। कई बार हमें लगता है कि हमारी मेहनत बेकार जा रही है, लेकिन सच यह है कि हर प्रयास हमें लक्ष्य

के करीब ले जाता है। जिस दिन सपने पूरे होते हैं, उस दिन एहसास होता है कि हर संघर्ष सार्थक था। जब कोई सपना मेहनत की भट्टी में तपकर पूरा होता है, तो उसकी खुशी अलग ही होती है। वह सफलता न केवल हमारी पहचान बनती है, बल्कि दूसरों के लिए प्रेरणा भी बन जाती है। ऐसी सफलता हमें विनम्र बनाती है और आगे बढ़ने की नई ताकत देती है। सपने अचानक पूरे नहीं होते, वे समय लेते हैं, परीक्षा लेते हैं और इंसान को तराशते हैं। लेकिन जब मेहनत का रंग उन पर चढ़ता है, तो वही सपने हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि बन जाते हैं। इसलिए सपने देखिए, लेकिन उनसे भी 'यादा मेहनत पर विश्वास रखिए। क्योंकि मेहनत से रंगे सपने ही इतिहास बनाते हैं।

यूथ रेडक्रॉस एवं वूमन सैल द्वारा 'मेरा स्वास्थ्य मेरा दायित्व' विषय पर कार्यशाला का आयोजन

शिक्षा का महत्व केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं : निशा मलिक

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय में आज यूथ रेडक्रॉस एवं वूमन सैल द्वारा आयोजित कार्यशाला में भारतीय स्टेट बैंक की सीएसआर पहल के तहत पुनः प्रयोज्य कपड़े से बने सैनेटरी पैड व इंसीनेरेटर मशीनें भेंट की गई, जिससे मासिक धर्म स्वच्छता के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिल सके। इस मौके पर विशेषरूप से पहुंची एसबीआई की चीफ मैनेजर आरबीओ, रोहतक निशा मलिक ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा का महत्व केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य जीवन में उसके मूल्यों को उतारना है। उन्होंने कहा कि भारतीय स्टेट बैंक महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए अनेक योजनाएँ संचालित कर रहा है। बैंक की ओर से महिलाओं के लिए विशेष बचत खाते, कम ब्याज दर पर ऋण, स्वरोजगार योजनाएँ तथा डिजिटल बैंकिंग सुविधाएँ



उपलब्ध कराई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण तभी संभव है जब स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता तीनों पर समान रूप से कार्य किया जाए।

आयुष विभाग से पधारी डॉ. प्रीति ने मासिक धर्म स्वच्छता पर बोलते हुए कहा

कि यह कोई वर्जित विषय नहीं, बल्कि महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़ा अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। सही जानकारी, स्वच्छ सैनेटरी उत्पादों का उपयोग और सुरक्षित निपटान से अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है। पुनः प्रयोग योग्य सैनेटरी पैड

महिलाओं को सुरक्षित, किफायती और पर्यावरण-अनुकूल विकल्प प्रदान करते हैं।

महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के महासचिव अशोक बुवानीवाला ने कहा कि महाविद्यालय छात्राओं की शिक्षा के साथ-साथ उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति पूरी

तरह सजग है और छात्राओं की सम्पूर्ण देखाभाल के लिए प्रतिबद्ध भी। महाविद्यालय में पढ़ने वाली बेटियों को किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होने दी जाएगी।

महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने भारतीय स्टेट बैंक एवं आए हुए अतिथियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि वह एसबीआई की इस पहल का स्वागत करती है। भविष्य में भी आपका मार्गदर्शन और सहयोग इसी प्रकार हमें मिलता रहेगा। इस पहल से छात्राओं के आत्मविश्वास को सुदृढ़ किया है।

इस अवसर पर प्रबंधकारिणी समिति के कोषाध्यक्ष सुंदरलाल अग्रवाल, सीबीएल्यू एग्जाम कंट्रोलर प्रो. पवन गुप्ता, एसबीआई भिवानी ब्रांच मैनेजर सतेन्द्र दहिया, रोहतक से अनिल कुमार, एनजीओ यूनिपैड से नेहा, कार्यक्रम संयोजक डॉ. अपर्णा बत्रा, डॉ. ममता चैधरी, लविशा उपस्थित रहे।

बॉर्डर-2 की कहानी, एक जवान की बीवी की जुबानी

हाल ही में रिलीज फिल्म बॉर्डर-2 जिसके निर्देशक अनुराग सिंह है। दिल को दिल को छू लेने वाली फिल्म के बारे आज मैं अपने कुछ विचार रखने जा रही हूँ। मैं वैशाली (सहायक प्राध्यापिका) होने के साथ-साथ एक सोल्जर की पत्नी भी हूँ। सबसे पहले मैं शूट-शूट नमन करती हूँ हमारी तीनों भारतीय सेनाओं को (वायु सेना, जल सेना तथा थल सेना)।

मैं जब बॉर्डर-2 देखने थिएटर में बैठी थी, तो मेरे सामने सिर्फ एक फिल्म नहीं थी, मुझे हर सीन में अपना घर, अपनी प्रतीक्षा, अपनी प्रार्थनाएँ नजर आ रहे थे। मैं ये मानती हूँ कि आज के युवाओं को इस तरह की फिल्म दिखाना बहुत जरूरी है ताकि उन्हें भी पता चले कि आज हम जो आजादी की जिंदगी जी रहे हैं उसके पीछे कितने



बलिदान, कितनी शहादत, कितनी वीरगाथाएँ हैं। दुश्मनों से हमारे देश को बचाने के लिए

कितने सैनिक रोज शहीद होते हैं वो भी किसी के बेटे, किसी के पिता और पति हैं।

बिना अपनी जान की परवाह किए भारतमाता के लिए हंसते हंसते अपने आप को कुर्बान करने वाले ऐसे वीर सपूतों के बारे में पूरी दुनिया को पता होना चाहिए। कई बार लोगों के द्वारा बोला जाता है अरे फौजी है-पागल होगा, सनकी होगा। पर वो पागल या सनकी नहीं अनुशासित है और अगर यही अनुशासन युवा अपनी जिंदगी में उतार ले तो हमारा देश वास्तव में विश्वगुरु बन सकता है। इस फिल्म के द्वारा लोगों को ये दिखाने की कोशिश की गई है कि देश की रक्षा सिर्फ सीमा पर खड़े जवान नहीं करते बल्कि उनके पीछे खड़े उनके परिवार भी उस लड़ाई का एक हिस्सा होते हैं। मेरे लिए बॉर्डर-2 सिर्फ एक वॉर फिल्म नहीं है बल्कि यह एक सलाम है हर उस पत्नी को जो मुस्कुराकर अपने पति को विदा करती है, हर उस माँ को

जो अपनी बूढ़ी आँखों के सहारे को हसते-हसते भेज देती है ताकि उसका बेटा अपनी भारत माँ की रक्षा कर सके। मैं ये मानती हूँ कि इस फिल्म में हर सीन को बड़े अच्छे तरीके से चित्रित किया गया है। हर रिश्ते की सीमा को सुन्दरता से पिरोया गया है। अपने शब्दों को विराम देते हुए बस यही कहना चाहूँगी कि एक प्रभावशाली फिल्म जिसमें कुछ सिनेमाई अतिशयोक्तियों के बावजूद सैनिकों और उनके परिवारों के बलिदान को सम्मानपूर्वक प्रस्तुत किया गया है। यह फिल्म दर्शकों को यह सोचने पर मजबूर करती है कि हर वीरों के पीछे एक परिवार खड़ा होता है जो चुपचाप देश के लिए त्याग करता है।

जय हिंद, जय भारत।

- वैशाली, सहायक प्राध्यापिका

पद्म पुरस्कारों में मेडल के अलावा क्या मिलता है?



गणतंत्र दिवस के मौके पर भारत सरकार ने पद्म पुरस्कारों की घोषणा की। इस बार कुल 5 पद्म विभूषण, 13 पद्मभूषण और 113 पद्मश्री पुरस्कार मिलेंगे। यह पुरस्कार खेल, शिक्षा, तकनीक, उद्योग, राजनीति, साहित्य, फिल्म जगत, समाजसेवा जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले लोगों को मिलेंगे। ऐसे में यह भी जानना आवश्यक है कि इन पुरस्कारों को पाने वाले लोगों को क्या कुछ मिलता है और इनकी शुरुआत कब व कैसे हुई थी।

भारत रत्न के बाद सबसे प्रतिष्ठित सम्मान: भारतीय गणराज्य में भारत रत्न सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। उसके बाद पद्म पुरस्कारों का स्थान आता है। भारत में अब तक 53 हस्तियों को भारत रत्न मिले हैं। इसके बाद 48 हस्तियों को पद्म विभूषण, 1352 को पद्म भूषण और 3757 लोगों को पद्मश्री सम्मान दिए गए हैं। भारत रत्न के बाद पद्म विभूषण दूसरा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान है। इसके बाद पद्म भूषण और फिर पद्मश्री पुरस्कार आता है। इनकी शुरुआत 1954 में भारत सरकार ने की थी।

क्या कोई आर्थिक लाभ भी मिलता है? पद्म पुरस्कारों के साथ कोई नकद रकम नहीं दी जाती है। यह सम्मान प्रतीकात्मक होते हैं। इनमें वेतन, पेंशन या आर्थिक लाभ जुड़ा नहीं होता। पद्म सम्मान में राष्ट्रपति द्वारा पदक दिया जाता है। एक सम्मान पत्र दिया जाता है। इस सम्मान को देने के लिए राष्ट्रपति भवन में विशेष समारोह आयोजित किया जाता है। इसके अतिरिक्त इस सम्मान के साथ समाज में प्रतिष्ठा, पहचान व आधिकारिक मान्यता प्राप्त होती है।

पद्म पुरस्कार के आवेदन प्रक्रिया क्या है? पद्म पुरस्कार प्राप्त करने के लिए एक नामांकन प्रक्रिया होती है। कोई भी नागरिक इन पुरस्कारों के लिए नाम का सुझाव दे सकता है। स्वयं के लिए आवेदन करने की अनुमति नहीं होती है। नामांकन ऑनलाइन या ऑफलाइन दोनों तरह से किया जा सकता है। इसके अलावा केंद्र या राज्य सरकार या फिर कोई संस्थान सम्मान के लिए नाम भेज सकते हैं। गृह मंत्रालय नामांकनों को एकत्र करता है। उच्च स्तरीय समिति इन नामों की समीक्षा करती है।

बदलते मौसम में रखें सेहत का ध्यान

मौसम का बदलना प्रकृति का नियम है, लेकिन यही बदलाव हमारे शरीर के लिए कई तरह की चुनौतियाँ भी लेकर आता है। कभी तेज गर्मी, कभी अचानक ठंड, तो कभी उमस और बारिशकूड़न उतार-चढ़ावों का सीधा असर हमारी सेहत पर पड़ता है। ऐसे समय में थोड़ी सी लापरवाही भी सर्दी-खांसी, बुखार, एलर्जी, वायरल संक्रमण और पेट संबंधी बीमारियों को न्योता दे सकती है। इसलिए बदलते मौसम में सेहत का ध्यान रखना बेहद आवश्यक हो जाता है। बदलता मौसम सावधानी की मांग करता है, न कि डर की। यदि हम अपने खान-पान, दिनचर्या और स्वच्छता पर ध्यान दें, तो मौसम का यह बदलाव हमारी सेहत को नुकसान नहीं पहुँचा सकता। थोड़ी सी जागरूकता और नियमित देखभाल से हम खुद को और अपने परिवार को स्वस्थ रख सकते हैं।

मौसम परिवर्तन और शरीर पर असर

हमारा शरीर वातावरण के अनुसार खुद को ढालने की कोशिश करता है। लेकिन जब मौसम अचानक बदलता है, तो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) कमजोर पड़ने लगती है। तापमान और नमी में बदलाव से वायरस और बैक्टीरिया अधिक सक्रिय हो जाते हैं, जिससे संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। खासतौर पर बच्चे, बुजुर्ग और पहले से बीमार लोग इस समय अधिक प्रभावित होते हैं।

संतुलित और ताजा आहार है सबसे जरूरी

बदलते मौसम में खान-पान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। तली-भुनी, बहुत ठंडी या बासी चीजों से बचना चाहिए। मौसमी फल और हरी सब्जियाँ शरीर को जरूरी पोषक तत्व देती हैं और इम्युनिटी बढ़ाती हैं।

विटामिन-सी से भरपूर फल जैसे संतरा, अमरूद, नींबू और आंवला इस समय बेहद लाभकारी होते हैं। पाचन तंत्र को मजबूत रखने के लिए हल्का और सुपाच्य भोजन करें। अधिक मसालेदार भोजन से पेट की समस्याएँ बढ़ सकती हैं।

पानी और तरल पदार्थ का महत्व

अक्सर लोग ठंड या बारिश के मौसम में पानी कम पीने लगते हैं, जो गलत है। शरीर को विषैले तत्वों से मुक्त रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी पीना जरूरी है। गुनगुना पानी, हर्बल चाय, सूप और काढ़ा शरीर को भीतर से मजबूत बनाते हैं और संक्रमण से बचाते हैं।

मौसम के अनुसार कपड़ों का चयन

अक्सर लोग मौसम के बदलाव को नजरअंदाज कर देते हैं और वही कपड़े पहनते रहते हैं, जिससे सर्दी-जुकाम की समस्या हो जाती है। सुबह-शाम हल्की ठंड और दिन में गर्मी होने पर लेयरिंग वाले कपड़े पहनना बेहतर होता है। इससे शरीर का तापमान संतुलित रहता है।

व्यायाम और पर्याप्त नींद

नियमित व्यायाम शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। हल्की सैर, योग और प्राणायाम बदलते मौसम में बहुत फायदेमंद होते हैं। इसके साथ-साथ पर्याप्त नींद लेना भी जरूरी है, क्योंकि नींद की कमी से शरीर जल्दी थक जाता है और बीमारियों की आशंका बढ़ जाती है।

घरेलू उपाय और सावधानी

सर्दी-खांसी या हल्के बुखार को नजरअंदाज न करें। शुरुआती लक्षण दिखते ही घरेलू उपाय अपनाएँ और जरूरत पड़ने पर डॉक्टर से सलाह लें। अदरक, तुलसी, शहद और हल्दी जैसे प्राकृतिक तत्व रोगों से लड़ने में सहायक होते हैं।

याद रखें: मौसम बदलता रहेगा, लेकिन अगर सावधानी साथ हो, तो सेहत सुरक्षित रहेगी।



महाशिवरात्रि: आस्था, आत्मचिंतन और शिव-तत्व का महापर्व

भारतीय सनातन परंपरा में महाशिवरात्रि केवल एक पर्व नहीं, बल्कि आत्मबोध और साधना की एक विशेष रात्रि है। यह वह पावन अवसर है जब संपूर्ण सृष्टि शिव-तत्व में लीन होकर शांति, संतुलन और चेतना का अनुभव करती है। महाशिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाई जाती है और इसे भगवान शिव की उपासना की सबसे महत्वपूर्ण रात्रि माना गया है।

शिव को देवों के देव महादेव कहा गया है। कृष्ण सृजन, संरक्षण और संहार तीनों के प्रतीक हैं। शिव न केवल संहारक हैं, बल्कि पुनर्निर्माण के भी आधार हैं। उनकी आराधना हमें यह सिखाती है कि विनाश के बाद ही नवसृजन संभव है। यही कारण है कि महाशिवरात्रि आत्मशुद्धि और आत्मचिंतन का पर्व मानी जाती है। 'शिव' शब्द का अर्थ है-कल्याण। शिव वह शक्ति है जो अज्ञान के अंधकार को समाप्त कर ज्ञान का प्रकाश फैलाती है। महाशिवरात्रि की ध्यान का विशेष महत्व है। मान्यता है कि इस रात्रि में शिव-तत्व पृथ्वी पर अत्यंत सक्रिय होता है,



जिससे साधना और ध्यान शीघ्र फलदायी होते हैं। इस दिन व्रत रखकर, रात्रि जागरण कर, शिवलिंग पर जल, दूध, बेलपत्र, धतूरा और भस्म अर्पित की जाती है। यह केवल परंपरा नहीं, बल्कि प्रकृति और चेतना के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रतीक है। बेलपत्र तीन पत्तियों वाला होता है, जो त्रिगुणकृत्व, रज और तमकृका प्रतीक माना जाता है। इन्हें शिव को अर्पित कर मनुष्य अपने भीतर के विकारों को त्यागने का संकल्प लेता है। भगवान शिव का व्यक्तित्व अत्यंत सरल और सहज है। वे कैलाश पर्वत पर वास करते हैं, भस्म धारण करते हैं और नागों को आभूषण की तरह पहनते हैं। यह दर्शाता है कि सच्चा वैभव बाहरी आडंबर में नहीं, बल्कि आंतरिक संतोष में है। शिव हमें यह सिखाते हैं कि जीवन में संतुलन सबसे आवश्यक है-भोग और त्याग के बीच, क्रोध और करुणा के बीच, मौन और अभिव्यक्ति के बीच। शिव का उमरू सृष्टि की ध्वनि का प्रतीक है, जबकि त्रिशूल तीनों कालकृभूत, वर्तमान और भविष्यकृपर नियंत्रण का संकेत देता है। उनकी जटाओं से निकली गंगा ज्ञान की अविचल धारा का प्रतीक है, जो

जीवन को पवित्र बनाती है। महाशिवरात्रि को भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह का पर्व भी माना जाता है। यह दंपत्य जीवन में समर्पण, विश्वास और समानता का आदर्श प्रस्तुत करता है। शिव और पार्वती का संबंध यह सिखाता है कि एक सशक्त परिवार की नींव सम्मान और सहयोग पर टिकी होती है। आज का मानव तनाव, प्रतिस्पर्धा और असंतुलन से घिरा हुआ है। ऐसे समय में महाशिवरात्रि हमें ठहरकर अपने भीतर झाँकने का अवसर देती है। यह पर्व हमें सिखाता है कि जीवन की आपाधापी में कुछ क्षण मौन, ध्यान और आत्मसंयम के लिए निकालना कितना आवश्यक है। महाशिवरात्रि का वास्तविक संदेश केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं है, बल्कि शिव के गुणों को जीवन में उतारने में है सहजता, करुणा, धैर्य और समभाव। जब हम अपने भीतर के अहंकार, क्रोध और लोभ को त्यागते हैं, तभी सच्चे अर्थों में शिव की आराधना होती है। महाशिवरात्रि आस्था का पर्व होने के साथ-साथ आत्मजागरण का अवसर भी है। यह रात्रि हमें यह स्मरण कराती है कि शिव बाहर नहीं, हमारे भीतर विद्यमान है। जब मन शांत होता है, विचार शुद्ध होते हैं और कर्म संयमित होते हैं, तभी जीवन में शिव-तत्व का वास होता है। इस महाशिवरात्रि पर आइए, हम केवल दीप और धूप ही नहीं जलाएँ, बल्कि अपने भीतर भी ज्ञान, करुणा और संतुलन का प्रकाश प्रज्वलित करें।

सुडोकू पजल

नियम: 1 से 9 तक के अंक इस तरह भरिए कि हर पंक्ति में हर स्तंभ में और हर 3x3 बॉक्स में कोई भी अंक दोहराया न जाए।

5	3			7		
6		7		5		8
	9		5		0	
8		8		1	6	3
			8		3	1
4		1			2	6
		2	6		4	1
7			8		7	5

बजट 2026-27: राहत कम, विकास पर जोर

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में वित्त वर्ष 2026-27 का केंद्रीय बजट पेश करते हुए विकसित भारत की नींव को और मजबूत करने का रोडमैप साझा किया है। युवा शक्ति और आर्थिक स्थिरता पर केंद्रित इस बजट का कुल आकार लगभग 53.5 लाख करोड़ रुपये रखा गया है। सरकार ने विकास की रफ्तार बनाये रखने के लिए बुनियादी ढांचे और मैन्युफैक्चरिंग पर सरकारी खजाना खोल दिया है, वहीं राजकोषीय अनुशासन को भी प्राथमिकता दी है। सरकार ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 4.3 फीसदी तक सीमित रखने का लक्ष्य रखा है, जो चालू वित्त वर्ष के 4.4 फीसदी के अनुमान से कम है। मध्यम वर्ग और आम आदमी को तुरंत मिलने वाली राहत सीमित रही। निर्मला सीतारमण ने रिकार्ड 9वीं बार बजट पेश किया। भाषण 85 मिनट का रहा। कोई कविता-शायरी नहीं।

टैक्स स्लैब में कोई बदलाव नहीं
इनकम टैक्स स्लैब पर सबकी नजर थी, लेकिन उसमें सरकार ने कोई बदलाव नहीं किया है। मतलब 12 लाख तक की अगर आपकी आमदनी है तो वो टैक्स फ्री रहेगी। बजट से एक चीज समझ आई है मोदी सरकार का फोकस टियर 2 और टियर 3 शहरों पर है। इन शहरों में इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 12.2 लाख करोड़ का बजट दिया गया है।

रक्षा बजट में भारी बढ़ोतरी
वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए रक्षा बजट 7,84,678 करोड़ रुपये आवंटित किया गया है, जो पिछले साल की तुलना में 15.3 प्रतिशत अधिक है। यह आवंटन अगले वित्तीय वर्ष के अनुमानित जीडीपी का 2 प्रतिशत है। इसमें रक्षा बलों के आधुनिकीकरण के लिए 2.1 लाख करोड़ रुपये मिलेंगे। रक्षा मंत्रालय के पास राफेल लड़ाकू विमानों, पनडुब्बियों और मानवरहित हवाई वाहनों जैसे कई महत्वपूर्ण परियोजनाएं पाइपलाइन में हैं। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, ऑपरेशन सिंदूर की ऐतिहासिक

सफलता के बाद, इस बजट ने देश की रक्षा प्रणाली को और मजबूत करने के हमारे संकल्प को बल दिया है। इस बजट का मुख्य फोकस हमारे तीनों सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण पर है। यह बजट सुरक्षा, विकास और आत्मनिर्भरता के बीच संतुलन को मजबूत करता है।

खुलेंगे 3 नये आयुर्वेद एम्स
वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि देश में 3 नए आयुर्वेद एम्स खुलेंगे। इसके अलावा, 5 क्षेत्रीय चिकित्सा केंद्रों की स्थापना भी होगी।

किसानों और गामीण भारत के लिए
कृषि क्षेत्र में कोल्ड-चेन, वेयरहाउस और एग्री-टेक को बढ़ावा देने के संकेत मिले हैं। ग्रामीण रोजगार, स्वयं सहायता समूह (रवा) और महिला सशक्तिकरण से जुड़ी योजनाओं को मजबूत करने की बात कही गई है, हालांकि किसानों को तुरंत नकद राहत की कोई बड़ी घोषणा नहीं हुई।

इंफ्रास्ट्रक्चर पर सबसे बड़ा दांव
बजट 2026 में सरकार ने बुनियादी ढांचे के लिए 12 लाख करोड़ से अधिक के कैपिटल एक्सपेंडिचर का प्रावधान किया है। सड़कों, हाई स्पीड रेल कॉरिडोर, मेट्रो, जलमार्ग और लॉजिस्टिक्स नेटवर्क को मजबूत करने पर जोर दिया गया है। सरकार का मानना है कि इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और आर्थिक गतिविधियों को गति मिलेगी।

भविष्य का बजट
यह बजट सरकार के विकसित भारत /2047 विजन को आगे बढ़ाने वाला माना जा रहा है, जिसमें इंफ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजी, मैन्युफैक्चरिंग, स्वास्थ्य और शिक्षा पर बड़ा फोकस दिखा। वहीं मध्यम वर्ग और आम आदमी को तुरंत मिलने वाली राहत सीमित रही, क्योंकि इनकम टैक्स स्लैब में कोई बड़ा बदलाव नहीं किया गया। कुल मिलाकर आम बजट को राहत कम, रफ्तार ज्यादा वाला बजट कहा जा सकता है। भविष्य की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजी और मानव संसाधन

बजट पर छात्रों की प्रतिक्रियाएं



सरकार ने शिक्षा पर टीडीएस घटाकर 2 प्रतिशत किया है। इसके लिए सरकार को धन्यवाद देते हैं, क्योंकि, इसका लाभ मिलेगा। सरकार पहले से ही सर्व शिक्षा अभियान चला रही है, जो काफी हितकारी है।
- मुकेश, एम.ए. इकोनॉमिक्स, अंतिम वर्ष

बजट 2026 में सबसे बड़ा इन्वेस्टमेंट देश के हर जिले में एक गर्ल्स हॉस्टल बनाना है। कुछ जिलों में ज्यादा लड़कियां स्कूल नहीं जाती, यह नया हॉस्टल प्रोग्राम स्टूडेंट्स के इस ग्रुप के सामने आने वाली बड़ी चुनौतियों में से एक को हल करने में मदद करेगा। हम चाहते हैं कि जल्द से जल्द इस पर काम हो और इसे बनाया जाए, ताकि फायदा मिल सके।
- सुधेघ, एम.के. इकोनॉमिक्स, अंतिम वर्ष



बजट में शिक्षा को रोजगार और एंटरप्रेन्योरशिप के साथ जोड़ने के अपने लक्ष्य तय किए हैं ताकि सभी छात्र अपने संस्थानों से आज के एम्प्लॉयर्स की उम्मीदों पर खरा उतरने के लिए तैयार होकर निकलें। ये देश की भावी पीढ़ी को स्किलड के तौर पर तैयार करने में बेहतर कदम होगा।
- रितू, एम.के. इकोनॉमिक्स, अंतिम वर्ष

बजट स्टूडेंट डेवलपमेंट और इंस्टीट्यूशनल ग्रोथ को सपोर्ट करता है। यह वह फ्रेमवर्क देता है जिससे अच्छे स्टूडेंट्स स्किल डेवलप करेंगे, नौकरी के मौके तलाशने और अच्छी क्वालिटी की शिक्षा पाने के लिए रिसोर्स उपलब्ध होंगे।
- श्वेता, एम.कॉम. प्रथम वर्ष



यूनियन बजट 2026 अच्छी क्वालिटी की शिक्षा को प्राथमिकता देता है और स्किल डेवलप करने, स्टूडेंट्स को एजुकेशनल सर्विसेज तक बराबर पहुँच देने और इंस्टीट्यूशन की वैल्यूज के हिसाब से स्टूडेंट वेलफेयर को बेहतर बनाने के लिए कमिटेड है।
- मंजू, एम.कॉम.

विदेश में हायर एजुकेशन की योजना बना रहे स्टूडेंट्स के लिए, विदेशी एजुकेशन खर्च पर टैक्स कलेक्शन एट सोर्स (टीसीएस) में कमी से जरूरी फाइनेंशियल राहत मिलती है। यह कदम स्टूडेंट्स और उनके परिवारों के लिए इंटरनेशनल एजुकेशन को ज्यादा आसान बनाता है।
- रश्मि, एम.कॉम.



बजट में मुंबई के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव टेक्नोलॉजीज के सहयोग से 15,000 सेकेंडरी स्कूलों में कंटेंट क्रिएटर लैब्स (एवीजीसी कंटेंट क्रिएटर लैब्स) की स्थापना की बात कही गई है। इसी तरह की लैब्स 500 कॉलेजों में भी स्थापित की जाएंगी। इस कदम से छात्रों को एनिमेशन, वीडियो, गेमिंग और क्रिएटिव कंटेंट क्रिएशन जैसे क्षेत्रों में स्किल्स से लैस करने में सहायता मिलेगी।
- प्रिया, एम.कॉम.



पर बड़ा दांव खेला है। इसका वास्तविक असर आने वाले वर्षों में रोजगार, विकास और जीवन स्तर में सुधार के रूप में देखने को मिल सकता है। यह आम आदमी की तत्काल अपेक्षाओं से कम, लेकिन देश की

दीर्घकालिक जरूरतों के ज्यादा करीब है।
सेमीकंडक्टर और टेक्नोलॉजी को बढ़ावा
भारत को वैश्विक मैन्युफैक्चरिंग हब बनाने के लक्ष्य के तहत सेमीकंडक्टर मिशन 2.0 की

घोषणा की गई। इसके साथ ही अक क्लाउड कंप्यूटिंग, डेटा सेंटर और ग्रीन टेक्नोलॉजी में निवेश बढ़ाने की बात कही गई। इससे स्टार्टअप, आईटी सेक्टर और युवाओं को लंबे समय में फायदा मिलने की उम्मीद है।



ALUMNI ASSOCIATION
Adarsh Mahila Mahavidyalaya

#AmmbAlumniMeet2026
#SakhiSangam2026

SAKHI SANGAM
ALUMNI MEET 2026



Connecting Generations,
Inspiring Future

25TH APRIL 2026
COLLEGE PREMISES

REGISTER THROUGH THE QR CODE



Hansi Gate, Bhiwani

93069 40790

www.ammb.ac.in

principalammb@gmail.com

अनुपमा यात्रा

स्वामित्व, मुद्रक एवं प्रकाशक आदर्श महिला महाविद्यालय भिवानी द्वारा दैनिक भास्कर गोहाना रोड़, सुखपुरा रोहतक से मुद्रित करवाकर आदर्श महिला महाविद्यालय, हांसी गेट भिवानी-127021 से प्रकाशित किया जाता है। Title-Code:- HARBIL01906 प्रबंध सम्पादक: डॉ. अलका मित्तल कार्यकारी सम्पादक : डॉ. गायत्री बंसल

मोबाईल नम्बर: 9306940790 नोट: सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भिवानी न्यायालय होगा

Gmail: anupama.express@ammb.ac.in